www.samatahindi.webnode.com

समता हिन्दी

मासिक

वर्ष ४, अंक-१० "हिन्दी प्रेमियों की श्रेष्ठ पत्रिका" अक्तूबर - २०१०

गौरवनीय संपादक

डॉ. एस.एस. बाबु

संपादक

एस. चन्द्रशेखर

संयुक्त संपादक

एम. अनिलकुमार

कार्यालय

भारतीय समता हिन्दी प्रचार परिषद

सेंन्ट्रल आफीस, गुणदला, विजयवाडा-५२० ००४

फोन : ०८६६-२४५१६११

फैक्स : २४३९६९६

samatahindi@yahoo.com

सहयोग राशी

वार्षिक : १०० रुपये

विदेश में

एक अंक-ढाई यू.एस.डॉलर (US$2.5)

वार्षिक-पच्चीस यू.एस.डॉलर (US$25)

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी चन्द्रशेखर द्वारा सेंट्रल आफीस, गुणदला, विजयवाडा-५२००४ से प्रकाशित एवं शांति प्रिंटर्स और पब्लिषर्स गुणदला, विजयवाडा - ४ द्वारा मुद्रित

समता हिन्दी में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

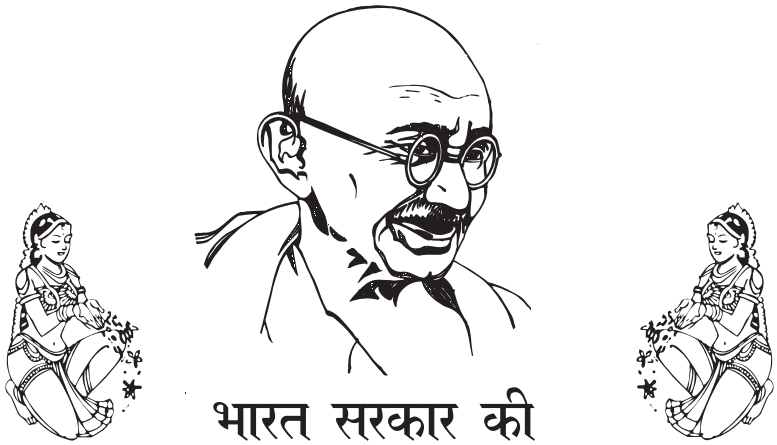

भारत सरकार की

मार्गदर्शक प्रेतात्मा (Guiding Spirit)

महान दार्शनिक और, राजनीतिज्ञ,
एक ओर आप एक महान सन्त और
दूसरी ओर एक अविजेय योद्धा
आपका एकमात्र शस्त्र था - अहिंसा ।
हे मानवता प्रेमी महापुरुष,
तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम अर्पित हैं ।
हे कोटि स्वरूप ! हमें अपने नैतिक
सिद्धान्तों पर और सत्य व अहिंसा का
आजीवन पालन करने की शक्ति दें ।
जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

हम है आपके
समता हिन्दी परिवार

संपादक

(एस.चन्द्र शेखर)

परीक्षा विवरण

❖ राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा ❖

समता हिन्दी प्रचार विभाग द्वारा संचालित राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा कार्यक्रम जीवनोपयोगी एवं अत्यन्त लाभदायक है। इस परिक्षा में निम्न कोटि के लोग भाग ले सकते है और उससे लाभान्वित हो सकते है।

१. कक्षा पाँचवी से दसवी तक अध्ययनरत सभी छात्र राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा में भाग ले सकते हैं।

२. राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा में सम्मिलित सभी प्रतिभागियों व अभ्यर्थियों को विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किया जायेगा।

३. स्कूल-स्तर पर प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले परिक्षार्थी को विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किया जायेगा।

४. प्रतिवर्ष जनवरी महीने में राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा आयोजित की जाती है।

५. हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी प्रत्येक प्रतिभागी छात्र को आधार प्रदान कर उसके विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा में सम्मिलित विद्यार्थी मुख्य रुप से हिन्दी में अपनी प्रतिभा का संबर्द्धन कर सकते है।

परीक्षा का नाम	:	**राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा**
परीक्षा	:	**जनवरी २०११**
परीक्षा समय	:	**९-०० से १०-००**
पाठ्यक्रम	:	**कक्षा की हिन्दी पुस्तक**
परीक्षा फीस	:	**४०/- रुपये मात्र**
परीक्षा केन्द्र	:	**हॉल टिकट में निर्देशित**

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क

परीक्षा सचिव,

समता हिन्दी प्रचार विभाग, गुणदला, विजयवाडा-५२० ००४

0866-2451611, 9848352011, 9885645639

मुफ्त में किताबों कैसे प्राप्त करें...

आप अपने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा में बिठाना चाहते हैं तो अपने स्कूल के प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थि से चालीस रुपये वसूल करके कुल १०० विद्यार्थि के लिए आप पाँच सौ रुपये लेकर बाकी तीन हजार पाँच सौ रुपये समता हिन्दी प्रचार विभाग विजयवाडा के नाम पर डि.डि. पहुँचते ही आपके नाम पर किताबें पहुँचा दी जाएगी। या परीक्षा शुल्क की राशि आन्ध्रा बैंक **online A/c** में **deposit** कर सकते हैं।

डि.डि. के पीछे प्रत्येक हिन्दी टीचर अपना पूरा पता वा स्कूल का नाम और कक्षा सहित **(Nominal Roll List)** के साथ प्रधान कार्यालय समता हिन्दी प्रचार विभाग, विजयवाडा-५२० ००४ के नाम पोस्ट करना है।

राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा का निर्वाहण :

NHT Exam केलिए अपने स्कूल में ही परीक्षा केन्द्र दिया जाएगा। परीक्षा के दिन हमारी संस्था के तरफ से एक ..... आकर परीक्षा का संचालन करते है। **NHT** परीक्षा समाप्त होने के बाद **"SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG, GUNADALA, VIJAYAWADA - 520 004 : Ph : 2451611,** के नाम ... भेजना चाहिए।

NHT MODEL PAPER

सातवी कक्षा से दसवी कक्षा तक राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा के प्रश्न पत्र सौ अंको का पेष होगा। सारे प्रश्न **MULTIPLE CHOICE QUESTIONS** में होंगे। **OMR (Optical Mark recognition)** में मार्क करना है। उदाहरण के लिए सातवी और दसवी कक्षा के कुछ प्रश्न दिये जाते है... उदाहरण :

❶❷●❹

राष्ट्रीय हिन्दी परीक्षा-२०११

(National Hindi Test - 2011)

KARNATAKA, TAMILNADU, KERALA & MAHARASHTRA

कर्णाटका, तमिलनाडु, केरला और महाराष्ट्रा के सभी परीक्षार्थियों के लिए सौ अंक में निर्देशित प्रश्न पत्र दिया जाएगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग–HINDI SAHITYA SAMMELAN

Send 5 Students and get Attractive Gift

It's our duty to honour the teacher

प्रथमा S.S.C.
PRATHAMA
Eligible for Central & Sate Govt. Jobs
ELIGIBILITY :
Those who completed 14 years

उत्तमा साहित्य रत्ना (Hindi M.A.)
UTTAMA SAHITYA RATNA
Eligible for Jr.Lecturers
ELIGIBILITY : Intermediate or Madhyama Visharada or Equalent Degree

मध्यमा विशारद Hindi B.A.
MADHYAMA VISHARAD
Eligible for L.P.Set & D.S.C.
ELIGIBILITY: S.S.C. Pass or Prathama Pass, Equal Degree

For Further Information
098483 52011
0866 - 2451611

तंदुरुस्ती के टिप्स

सही खान पान और व्यायाम से आप उम्र के हर दौर में खुद को चुस्त दुरुस्त बनाएँ रख सकती हैं । इसके लिए यह जानना जरूरी हैं कि आपको क्या खाना चाहिए और क्या नहीं, साथ ही किस तरह के व्यायाम करने चाहिए। कोई आपको देखकर आपकी उम्र के बारे में न बता सके . इसके लिए अपनी उम्र के मुताबिक करें व्यायाम और खुद को बीमारियों से दूर रखने के लिए कुछ टिप्स अपनाये :

★ खुली हवा में टहलना तन तथा मन दोनों को प्रफुल्लित रखता हैं ।

★ त्वचा की चमक बरकरार रखने के लिए सप्ताह में कम से कम एक बार मालिश करें ।

★ दिन में सोना हित कर नहीं होता दिन में न सोएँ रात्रि में ७ से ८ घंटे तक की नींद लें। अधिक सोना और कम सोना, दोनों ही नुकसानदेह होते हैं। रात्रि में जागरण न करें ।

★ स्वयं को तन्दुरुस्त रखने के लिए दो भाग अन्न और एक भाग जल से पेट को भरे । एक भाग पेट को भोजन पचाने के लिए खाली रखें ।

★ दूध का सेवन करते समय किसी अम्ल पदार्थ का सेवन न करें। दही भी प्रातः और दोपहर को ही लें। रात्रि में दही का सेवन न करें ।

★ अत्यधिक शारीरिक थकान के तुरन्त बाद भोजन का सेवन न करें। ऐसा करने से उल्टी आ सकती हैं ।

★ भोजन शीघ्रता से न करे। उससे भोजन ऊपर नासिका छिद्रो मे चला जाता है जो अवसाद उत्पन्न करता हैं। भोजन शांत मन से करें ।

★ मनुष्य को भोजन वही करना चाहिए जो स्वस्थ्य रक्षक हो।

★ अधिक नमक के सेवन से झुरियाँ असमय हो जाती हैं, इसलिए नमक का सेवन कम करें ।

★ पैरों के तलुवों पर तेल मालिश करने से आंखों को लाभ होता हैं ।

★ चिन्ता, शोक, भय, क्रोध आदि में किया गया भोजन अच्छी तरह से नहीं पचता ।

★ शीत ऋतु में जठाराग्नि तेज होती है। ऐसे में अपने शरीर की भूख को शांत करना चाहिए नहीं तो शरीर शिथिल पड जाता हैं ।

★ स्वस्थ रहने के लिए आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य, इन तीन मुख्य कर्तव्यों का पालन करना चाहिए ।

★ अग्नि के सामने काम करने के बाद और तेज धूप से आने के बाद एकदम शीतल जल से स्नान न करें। इससे चमडी तथा दृष्टि को नुकसान पहुंच सकता हैं ।

★ शौच जाने से पूर्व कम से कम एक दो गिलास जल अवश्य ले तथा शौच दोनों समय जायें ।

★ भोजन में रेशेयुक्त सब्जी व फलों का प्रयोग करें तथा घी देल, मसाला, आचार आदि गरिष्ठ भोज्य पदार्थों का कम से कम प्रयोग करें ।

★ भोजन भूख लगने पर ही करें। बिना भूख भोजन न करें। भूख से भोजन थोडा कम ही करें। भोजन करते समय जहां तक संभव हो, जल न लें। यदि बहुत जरूरत होतो एक दो घूंट जल ही लें। भोजन करने के एक घंटे पश्चात् ही जल लें ।

★ सुबह शाम आधा घंटा नंगे पांव अवश्य रहें। संभव हो तो कच्ची मिट्टी युक्त भूमि पर नंगे पाव टहलें ।

★ सदा प्रसन्न रहें। बिना वजह न बोलें किसी भी छोटी छोटी बात को अपनी प्रतिष्ठा का निषय न बनायें एवं बेमतलब

You Imagine... We Deliver....

You Imagine... We Deliver....

Sri Lakshmi Enterprises

WHOLESALE DISTRIBUTORS

ALL KINDS GIFT ARTICLES & NOVELTIES

Aishwarya Apartments, Masjid Street,
Marutinagar, VIJAYAWADA-4.

Ph : 0866-2451611, Cell : 94400 33910

WE PRINT YOUR LOGO & NAME FOR BULK ORDERS

FOR PRODUCT LIST & PRICE LIST

visit our website : www.srilakshmi.webnode.com

चिन्ता न करें ।

★ सदा प्रसन्न रहें और हमेशा हंसते रहें हंसना हर बीमारी की दवा हैं ।

★ रोजाना सुबह नाश्ते में मौसमी का सेवन करे या कोई रेशेदार फल खायें। इसमें विटामिन ए.सी. कैल्शियम, मैग्नीशियम आदि पौषक तत्व पाए जाते है जो कि चेहरे की चमक बढाते हैं ।

★ न तो डाइटिंग करें और न ही जरूरत से ज्यादा भोजन करें। आयली जंक फूड से दूर रहें ।

★ रोजाना वाक करें। टांगों की मासपेशियों के लिए यह फायदेमंद होती हैं। इससे शरीर चुस्त दुरुस्त रहता हैं। वाक करने से जोडों में मजबूती आती हैं ।

★ शरीर को चुस्त रखने व बाडी एक्स से बचाव के लिए किसी अच्छे पार्लर में जाकर बाडी मसाज करवाएँ। इससे आपका पूरा शरीर ताजगी महसूस करेगा और मांसपेशियों का भी आराम मिलेगा ।

घर का वैद्य

★ आंखों में जलन ★

कारण : आंखों में जलन होने के अनेक कारण हो सकते हैं। प्रायः गरमी के दिनों में धूप में चलने फिरने या तंबाकू आदि का सेवन अधिक करने से यह रोग हो जाता हैं। इसके अलावा मिर्च मसालेदार भोजन खाने, पानी का उपयोग कम करने, कुछ दवाओं की प्रतिक्रिया होने और अधिक देर तक लिखने पढने से भी सि रोग की उत्पत्ति होजाती हैं ।

लक्षण : आंखों में जलन होनेपर आंखें लाल हो जाती हैं। उनमें तीव्र पीड़ा होने लगती हैं। आंखों को खोलने और बंद करने में अपार कष्ट होता हैं। कभी कभी ऐसा महसूस होता है जैसे आंख जल रही हो। कई बार आंखों में जलन होनेपर पलकों में सूजन भी आ जाती हैं ।

उपचारः

★ गाढ़े दही की टिकिया बनाकर रोजाना दो तीन बार आंखों की पलकों पर थोड़ी देर तक रखिए ।

★ पलकों को बंद करके उस पर मट्ठे या छाछ के छींटें मारें ।

★ सुबह शाम नमक डालकर मट्ठे का सेवन करें ।

★ चौथाई चमच्च पिसी काली मिर्च खाकर एक गिलास मट्ठा पिएँ ।

ज्ञान समाचार

सिनेमा जगत

प्रश्न : भारत में सर्व प्रथम फिल्म कब और कहाँ प्रदर्शित हुई
उत्तर : 7 जुलाई, 1896 को मुम्बई के बाटसंस होटल में ।

प्रश्न : प्रथम भारतीय फिल्म कौनसी थी ?
उत्तर : राजा हरिश्चन्द्र (1913)

प्रश्न : भारत में प्रथम बोलती हुई फिल्म कौनसी थी ?
उत्तर : आलमआरा (1931)

प्रश्न : भारतीय फिल्म के लिए रिकार्ड किया गया पहला गाना कौनसा था ?
उत्तर : दे दे खुदा के नाम प्यारे, ताकत हो गर देने की (फिल्मः आलमआरा)

प्रश्न : भारत में सर्वाधिक पिक्चर चलने वाली फिल्म का नाम क्या हैं ?
उत्तर : शोले, मिनर्वा टाकिज़ (मुम्बई)

प्रश्न : प्रथम भारतीय फिल्म का प्रथम बाल कलाकार कौन था?
उत्तर : बालचंद (हरिश्चन्द्र)

प्रश्न : प्रथम भारतीय फिल्म के प्रथम भारतीय कलाकार कौन थे?
उत्तर : डी.डी. डाव्के और सालुंके

प्रश्न : विश्व का प्रथम सिनेमाघर कब और कहां बनाया गया था?
उत्तर : 1895 में जोर्जिया के अटलांटा शहर में

प्रश्न : भारत में कितने सिनेमाघर हैं ?
उत्तर : 6,101 स्थाई, 2,660 टूरिंग

प्रश्न : विश्व का सबसे बड़ा सिनेमाघर कौनसा हैं?
उत्तर : न्यूयार्क का रेडियो सिटी म्यूजिक हाल हैं। क्षमता 5882 सीटें

प्रश्न : विश्व का सबसे बड़ा टी.वी.टावर कौन सा हैं ?
उत्तर : लेह में (भारत ऊँचाई 3,440 मीटर)

प्रश्न : विश्व की सर्वप्रथम फिल्म कौन सी थी ?
उत्तर : लाइट आफ न्यूयार्क अमेरिका (1913)

प्रश्न : फिल्म जगत की कौन सी अभिनेत्री प्रथम संसद सदस्य बनी ? उत्तर : नरगिस (राज्य सभा)

प्रश्न : फिल्म जगत से कौनसा प्रथम अभिनेता संसद सदस्य बना ? उत्तर : पृथ्वीराज कपूर

वाक्य भेद

वाक्यों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता हैं -

क) रचना की दृष्टि से ।

ख) अर्थ की दृष्टि से ।

इनके भेद निम्नलिखित माने गए हैं -

क) रचना की दृष्टि - वाक्य तीन प्रकार के होते हैं ।

i) साधारण वाक्य,
ii) मिश्र वाक्य तथा
iii) संयुक्त वाक्य ।

1) साधारण वाक्य - जिस वाक्य में सरल मुख्य वाक्य का कोई आश्रित वाक्य सरल वाक्य कहते हैं । इसमें एक उद्देश्य और एक विधेय होता हैं, जैसे - मैं खाना खाता हूँ ।

2) मिश्र वाक्य - जिस वाक्य में सरल मुख्य वाक्य का कोई आश्रित वाक्य होता है, उसे (Complex) वाक्य कहते हैं। आश्रित वाक्य अपूर्ण होता हैं, उसकी सार्थकता मुख्य वाक्य पर निर्भर रहती हैं,

यथा - वही मनुष्य जो समाज के काम आये। इसमें वही मनुष्य है मुख्य उपवाक्य हैं। हमारा कथन स्पष्ट हैं ।

3) संयुक्त वाक्य - जिस वाक्य में साधारण वाक्यों या मिश्र वाक्यों का संयोग संयोजक अव्यय द्वारा होता हैं, उसे संयुक्त सरल वाक्य कहते हैं। इसमें दो या दो से अधिक सरल या मिश्र वाक्य संयोजक अव्ययों द्वारा संयुक्त रहते हैं । इसमें वाक्य स्वतन्त्र होता हैं, यथा -

1) मैंने खाना खाया और मैं तुरन्तु स्टेशन के लिए रवाना हो गया।

2) हवा आई और मच्छर उड़ गए ।

3) लड़का कक्षा से भागा जो अध्यापक द्वारा देख लिया गया ।

अर्थ की दृष्टि से - वाक्य रचना आठ प्रकार की मानी जाती हैं। इन आठ प्रकार के वाक्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं । जैसे -

1) विधि सूचक वाक्य - जिस वाक्य के द्वारा किसी कार्य सम्पादन का सामान्य बोध हो, उसे विधिसूचक वाक्य कहते हैं। जैसे - हम खाना खा रहे हैं ।

2) निषेध सूचक वाक्य - जिस वाक्य द्वारा किसी कार्य के सम्पादित न होने का बोध हो, निषेध सूचक वाक्य कहते हैं। जैसे - हम कलकत्ता नहीं जा सकेंगे ।

3) प्रश्न सूचक वाक्य - जिस वाक्य के द्वाका किसी पूछने अथवा किसी जिज्ञासा का बोध हो, उसे प्रश्न सूचक वाक्य कहते हैं । जैसे -

1) क्या तुम मीटिंग में जाओगे ?

2) वह कहाँ गया हैं ?

4) आज्ञासूचक वाक्य - जिस वाक्य के द्वारा किसी को आदेश देने का बोध हो, उसे आज्ञासूचक वाक्य कहते हैं ।

5) सन्देहसूचक वाक्य - जिस वाक्य के द्वारा किसी प्रकार के सन्देह अथवा किसी आशंका का बोध हो, उसे सन्देह वाचक वाक्य कहते हैं। जैसे - वह पास हो गया होगा ।

6) संकेतसूचक वाक्य - जिस वाक्य के द्वारा किसी सम्भावना की ओर संकेत हो संकेतसूचक वाक्य कहते हैं। जैसे - यदि तुम दुखी होगे तो फिर कोई सुखी न रह सकेगा ।

7) इच्छासूचक वाक्य - जिस वाक्य के द्वारा किसी इच्छा, शुभकामना आदि का बोध हो, उसे इच्छासूचक वाक्य कहते हैं। जैसे - ईश्वर करे, तुम सौ वर्ष जियो ।

आप फूले फलें यही कामना हैं ।

8) विस्मयसूचक वाक्य - जिस वाक्य के द्वारा हर्ष, शोक अथवा आश्चर्य का बोध हो उसे विस्मयसूचक वाक्य कहते हैं जैसे 1) अरे वह कब मर गया ? 2) भाई तुम खूब पास हुए।

उपसंहार : ये नियम सर्वथा वैज्ञानिक हैं। इनका सम्बन्ध पद एवं वाक्य की संरचना से हैं। उक्त नियमों के अतिरिक्त दो बातों का ध्यान विशेष रूपसे रखना चाहिए। अप्रचलित शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए तथा पुनरुक्ति दोष से बचना चाहिए। ★★★★★

इंतजार...

तू कभी जो हमारे शहर में आ जाए ।
मुद्दतों की छायी विरान गलियों में बहार आ जाए ।
तेरी आस लिये अंधेरी राह में चराग जला रखा ।
तेरे आने की आहट से अंधेरा भी सनम घबरा जाए ।
कितने जुल्मों को सहा हमने ऊफ तक न किया ।
तेरी खुशबू से गम भी मेरा शायद ठहर जाए ।
जानती हूँ तू न आयेगा फिर भी दिले नादान ।
अपना दर्द ए गम तुझको हमदम लिखा न जाए ।
अब तो सासों की डोर टूटती मालूम हो रही ।
ऐ जमाने मेरी लाश भी उनको ही सौंपी जाए ।

- ममता खुआब

शब्द भण्डार

हिन्दी साहित्य के आरम्भिक काल से ही हमें हिन्दी भाषा में चार प्रकार के शब्द प्राप्त होते हैं - तत्सम, तदभव, देशी और विदेशी। इनमें से जनसाधारण की भाषा में तदभव और साहित्यिक भाषा में तत्सम शब्दों की अधिकता हैं ।

:: तत्सम ::

साहित्यिक स्तर पर आकर और ज्ञान विज्ञान का माध्यम बनाते हुए हिन्दी को संस्कृत के तत्सम शब्दों का आश्रय सदा लेना पड़ा हैं - इस युग में भी, इससे पिछले युगों में भी. किन्तु, अब और तब की प्रवृत्ति में बड़ा अन्तर हैं। चन्दबरदाई, कबीर, सुर, तुलसी, भूषण, बिहारी, सेनापति और पद्याकर तक देख जाइए। इन कवियों ने संस्कृत के सैकडों शब्द लिये हैं, किन्तु उनमें बहुत से शब्द ऐसे हैं जिनको सामान्य स्तर की भाषा के अनुरूप ढालने का प्रयत्न किया जाता रहा है, जैसे अधिकता के स्थान पर अधिकाई, प्रवृत्ति > परबिरती, वर्षा > बरसा, वानर > बानर, यथायोग्य > जथाजोग, स्वर्ग > सुरग, ज्ञान > ग्यान, दर्शन > दरसन, श्लोक > सलोग, इत्यादि । ऐसे शब्दों को अर्थतत्सम कहा जाता हैं। आज का साहित्यकार सामान्य स्तर से ऊपर उठ कर संस्कृत के शब्दों को अपने शुद्ध तत्सम रूप में लिखना ही उचित समझता हैं। खड़ीबोली हिन्दी के विकास के साथ विशेष रूप से तत्सम शब्दों की संख्या वृद्धि होती रही हैं। हिन्दी ने अपना शब्द भण्डार एक निश्चित और सुदृढ़ क्रम से प्राचीन आर्य भाषा के कोष से भरा हैं। संस्कृत शब्दावली की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि के अनेक कारण हैं राजनीतिक जागृति और सांस्कृतिक उत्थान, शिक्षा के प्रसार और यातायात के विस्तार के साथ सार्वदेशिक सामान्य स्तर की चिन्ता, अहिन्दी भाषियों के लिए हिन्दी को सुबोध और सुगम बनाने की चेष्टा, ललति साहित्य के अतिरिक्त ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी साहित्य की माँग और पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता, राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की प्रतिष्ठा आदि आदि ।

तत्सम शब्द दो प्रकार के हैं - परम्परागत और निर्मित। परम्परागत वे शब्द हैं जो संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध हैं। दूसरे वे शब्द हैं, जो नयें विचारों और व्यापारों को अभिव्यक्त करने के लिए संस्कृत व्याकरण के अनुसार समय समय पर गढ़ लिये गये हैं। वैज्ञानिकों की माँग को पूरा करने के लिए सैकडों हजारों पारिभाषिक शब्द संस्कृत स्त्रोत्रों से बनाये गये हैं, यद्यापि वे संस्कृत अभिधानों में नहीं मिलते । साहित्यकारों ने, विशेषतया छायावादी युग और उसके बाद के कवियों ने भी सैकडों शब्द गढे और न जाने कितने अन्य लेखकों, विचारकों और विद्वानों ने अपनी आवश्यकता के अनुसार तत्सम शब्दावली का निर्माण किया हैं ।

परम्परागत कहने का ततापर्य यह नहीं है कि ऐसे शब्द सदा से चले ही आ रहे हैं । वास्तव में हिन्दी में इन्का पुनरुद्धार हुआ है। किन्तु, यह ठीक है कि ऐसे शब्द उठाये गये हैं संस्कृत के वाङ्यम से ।

वैदिक शब्द भण्डार का कितना अंश आर्य है और कितना अनार्य, इस पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ। हिन्दी भाषा के इतिहास को समझने के लिए यह विषय महत्तवहीन तो नहीं है, किन्तु मुख्यतः यह विषय भारत यूरोपीय भाषाविज्ञान से सम्बद्ध है और प्रागवैदिक भाषाओं की जानकारी के बिना इस पर कुछ कह सकना संभव नहीं हैं। इससे अधिक महत्तवपूर्ण बात यह है कि वैदिक शब्द भण्डार में से कितना रिक्थ हिन्दी को प्राप्त हुआ हैं । यजुर्वेद मेंआये हुए 'क' अक्षर से आरम्भ होने वाले निम्नलिखित शब्दों की परीक्षा कीजिए -

कक्षा, कक्ष, कण्ठ, कण्ठ्य, कथा, कदा, कनिष्ठ, कन्या, कपर्दिन, कपिंजल, कपोत, कर्कन्धु, कर्ण, कर्तन, कर्त्ता, कर्म, कलश, कल्याण, कवि, काम, काम्य, काव्य, काष्ठा, किल्विष, कुक्कुट, कुक्षि, कुंज, कुमार, कुम्भ, कुलाल, कुलंग, कुल्या, कूजन, कूर्म्म, कृत, कृपा, कृमि, कृषि, कृष्ण, केतु, केश, केसर, क्रम, क्रान्त, क्रीडा, क्रीत, क्रूर, क्रोध, आदि ।

एवं ऐतरेय ब्राह्मण के अ वर्ण के अन्तर्गत कुछ शब्दों को देखिए

अकाल, अक्षर, अक्षरशः, अक्षि, अंगुली, अग्नि, अग्र, अंक, अंग, अंगार, अतः, अति, अतिक्रमण, अतिथि, अतिवाद, अथ, अद्य, अधर, अधः, अधि, अधिजात, अधिपति, अधिराज, अनन्त, अनादृत, अनारब्ध, अनु, अनुकृति, अनुगमन, अनुचर, अनुचित, अनुद्धत, अनुमति, अनुरूप, अनुवाद, अन्त, अन्ततः, अन्तर, अन्तरिक्ष, अन्तर्धान, अन्ध, अन्न, अन्नाद्य, अन्य, अन्यतर, अन्यत्र, अन्यथा, अन्वि, अप, अपर, अपराजित, अपराह, अपरिमित, अपहत, अपहृत, अपान, अपाप, अपि, अपुत्र, अपूप, अपूर्व, अप्रतिम, अप्रतिष्ठित, अप्रतीत, अप्रिय, अभय, अभि, अभिक्रान्ति, अभिजित, अभितप्त, अभिप्रेत, अभिभूत, अभिमुख, अभिशस्त, अभिषिक्त, अभिषेक, अभिहित, अभीष्ट, अभ्यस्त, अमति, अमर्त्य, अमृत, अरण्य, अर्चन, अर्जन, अर्थ, अर्ध, अलङ्कार, अलोभ, अल्प अव, अवधि, अवर, अवरोध, अवरोह, अवसाद, अवान्तर, अश्रद्धा, अश्लील, अश्वत्य, अविच्छिन्न, अविज्ञात, अविद्या, अविमुक्त, अव्यवस्था, अव्रत, अशरीर, अशान्त, अश्रद्धा, अश्लील, अश्वत्थ, अष्टम, अष्टादश, असंभाव्य, असुर, असृष्ट, अस्त, अस्तु, अस्थि, अस्वादु, अहिंसा, अहित ।

★★★★★

हिन्दी के माध्यम अंग्रेज़ी सीखें

CERALS & EATABLES
(अन्न तथा खाद्य पदार्थ)

Bread	(ब्रेड)	रोटी
Bran	(ब्रान)	चोकर
Butter	(बटर)	मक्खन
Breakfast	(ब्रेकफास्ट)	जलपान
Curry	(करी)	कढ़ी
Cream	(क्रीम)	मलाई
Coffee	(काफी)	कहवा
Egg	(एग)	अंडा
Flour	(फ्लोर)	आटा
Feast	(फिस्ट)	भोज
Grain	(ग्रेन)	अनाज
Ghee	(घी)	घी
Icecream	(आइसक्रीम)	कुल्फी
Jam	(जैम)	मुरब्बा
Jaggery	(जैगरी)	गुड़
Loaf	(लोफ)	पावरोटी
Lunch	(लंच)	दोपहर का भोजन
Meel	(मील)	आटा
Millet	(मिलेट)	बाजरा
Barley	(बार्लि)	जौ
Biscuit	(बिस्कुट)	बिस्कुट
Beef	(बीफ)	गाय का मांस
Cheese	(चीज़)	पनीर
Corn	(कार्न)	दाना
Curd	(कर्ड)	दही
Dinner	(डिन्नर)	दोपहर का खाना
Honey	(हनी)	मधु
Food	(फूड)	भोजन
Fish	(फिश)	मछली
Gram	(ग्राम)	चना
Groundnut	(ग्रौउन्डनट)	मूंगफली
Ice	(आइस)	बर्फ
Jelly	(जेली)	जेली
Kidney Bean	(किडनीबीन)	मूंग
Lentyl	(लेनटील)	मसूर
Maize	(मेज)	मकई
Mash	(माश)	दलिया
Milk	(मिल्क)	दूध
Meat	(मीट)	मांस
Oatmeal	(ओटमील)	जई
Peanut	(पीनट)	मटर
Paddy	(पैडी)	धान
Rice	(राइस)	चावल
Soup	(सूप)	रस
Sugar	(सुगर)	चीनी
Sweet Meat	(स्वीटमीट)	मिठाई
Sauce	(सास)	चटनी
Supper	(सप्पर)	रात का भोजन
Tea	(टी)	चाय
Tobacco	(टौबैको)	तम्बाकू
Wheat	(ह्वीट)	गेहूँ
Water	(वाटर)	पानी
Molasses	(मालासेस)	छोआ
Mutton	(मटन)	भेड़ का मांस
Pulse	(पल्स)	दाल
Parched Rice	(पार्च्डराइस)	लावा
Pickles	(पिकल्स)	अचार
Seed	(सीड)	बीज
Sweet	(स्वीट)	मीठा
Sugarcandy	(सुगर कैंडी)	मिश्री
Salt	(साल्ट)	नमक
Sago	(सागो)	साबुदाना
Syrup	(सिरप)	शर्बत
Tiffin	(टिफिन)	जलपान
Vegetables	(वेजिटेबल्स)	साग सब्जी
Whey	(ह्वे)	मट्ठा
Wine	(वाइन)	शराब

★★★★★

हिन्दी भाषा सीखें ।
राष्ट्रीय भावना बढ़ाएँ ।

Good Opportunity to Teachers

₹500/- to ₹4,000/-

All the in-service (Govt. & Private) Teachers only can apply on or before 1-11-2010.

సమతా హిందీ ప్రచార విభాగ్ గత 22 సం॥లుగా హిందీ భాషా ప్రచార ప్రసారంలో తన వంతు ప్రయత్నాన్ని కొనసాగిస్తూ, ఎందరో విద్యార్థినీ, విద్యార్థులకు రాష్ట్రీయ హిందీ పరీక్షల ద్వారా ప్రోత్సాహం అందించుచున్నది. నేడు దేశంలోని 5 రాష్ట్రాలలో తన ఉనికిని చాటుచున్నది. ఈ హిందీ విజయోత్సవ ఫలాలను ప్రతి పాఠశాలలోని హిందీ సజ్జనులకు అందించవలయునని విభాగ్ సత్‌సంకల్పించినది.

హిందీ టీచర్లకు మరియు శిక్షక్ సజ్జనుల నుండి రీజనల్ ఆర్గనైజర్‌గా అప్లికేషన్స్ కోరబడుచున్నవి. హిందీ యెడల అభిమాన్నమున్నవారును (in-service) అప్లయ్ చేసుకొనగలరు. ఉపాధ్యాయని, ఉపాధ్యాయులు వారి వారి ఉద్యోగ బాధ్యతలు నిర్వహిస్తూనే, హిందీ కార్యకలాపములందు పాల్గొను టీచర్లందరికి రీజనల్ ఆర్గనైజర్ ప్రోత్సాహక అనుదాన్‌కు (రూ.500/- నుండి రూ.4000/-) ప్రతినెలా ఎంపిక చేయబడును. అప్లయ్ చేయగోరు ఉపాధ్యాయులందరు వారి రెండు పాస్ట్‌పోర్ట్ సైజు ఫొటోలు, మరియు పూర్తి వివరములతో ఈ క్రింది ఆర్.ఓ. ఫామ్‌ను పూర్తి చేసి వెంటనే మా చిరునామాకు పోస్ట్ చేయగలరు.

రిజిస్టర్ చేసుకొనదలచిన ఉపాధ్యాయులందరూ ఈ క్రింది ఫారమ్‌ను పూర్తిచేయుటతో పాటు, తమ పేరు, చిరునామా వివరాలను ఎస్.ఎమ్.ఎస్. ద్వారా కూడా 9440660126కు పంపకోరుచున్నాము.

All the teachers are requested to send their information through SMS and also through this below application.
Cell No. : 9440660126

అప్లయ్ చేసుకున్న ఉపాధ్యాయునీ, ఉపాధ్యాయుల పేర్లు నవంబరు మాసపత్రికలో ముద్రించగలము.

SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG

(Regd. by the Govt. of India)
Central Office Buildings, Opp. Boarding, Gunadala, VIJAYAWADA-520 004.
Ph : (0866) 2451611, 2440112 Mobile : 09848352011. e-mail : samatahindi@yahoo.com

REGIONAL ORGANISOR APPLICATION FORM (No.1)

Application No. _____

PLEASE FILL IN THE APPLICATION FORM COMPLETE IN BLOCK LETTERS

Teacher's Name _____

Date of Birth : _____ **Ph :** _____ **Mobile :** _____

Name (Father/Spouse) Mr./Mrs. _____

School Name _____

Regd. for the Month _____ **Date** _____

School Address	Residence Address

Signature of the Teacher _____

हँसी के फूल

★ बड़ा अफसर (हवलदार को डांटते हुए) - क्या तुम चोर को पकड़ने के एि उस मकान में घुस नहीं सकते थे ?

हवलदार : जी, घुस सकता था, लेकिन बाहर लिखा था अन्दर आना मना हैं ।

★★★

★ पत्रकार : प्रवीण सूची में स्थान पानेका श्रेय आप किसको देते हैं ?

एक छात्र : गुरुजी को जिन्होंने हमेसा घर में परीक्षा भवन में मेरी पूरी पूरी मदद की ।

★★★

★ एक लड़की (नाकु से) - मालूम है मेरा नाम गणेश दत्त हां हैं। अंग्रेजों में जी.डी.एच. भी कह सकते हैं ।

नाकु : हाँ हाँ जनता हूँ और हिन्दी में कहें तो ग द हा ।

★★★

★ कैमेस्ट्री के प्रोफेसर का एक बार अपनी पत्नी से झगड़ा हो गया तो उनकी पत्नी रोने लगी । उसे रोता देखकर प्रोफेसर साहब बोले - तुम्हारे इन आँसुों का मुझपर कुछ भी असर नहीं होगा. आंशू चीज ही क्या हैं ? थोडा सा फास्फोरस साल्ट, जरा सा सोडियम क्लोराइड और बाकी सब पानी ?

★★★

शिक्षक (छात्र से) : पाँच नारंगियों को छः व्यक्तियों में कैसे बाटोंगे ?

छात्र : रस निकाल कर ।

★★★

अनिल (अशोक से) : यार मूर्ख किसे कहते हैं ?

अशोक : जो ऐसे प्रश्न करें ।

★★★

एक दुकान दार के मरने के बाद उसे देवलोक में हाजिर किया जाता हैं। उससे देवतागण पूछते हैं - तुम्हें स्वर्ग में जाना है या नर्क में ?

तब दुकानदार कहता है - न स्वर्ग में जाना है न नर्क में । दोनों के बीच जगह दे दो तो किराना दुकान खोलूँगा ताकि दोनों तरफ से ग्राहक सामान लेने आएँ ।

★★★

माँ : बेटे ऐसे दो जन्तुओं के नाम बताओं जिनके दाँत नहीं होते?

बेटा : दादा और दादी ।

यादगार नग़मे

फिल्म : शोर

गीत : सन्तोष आनन्द **संगीतः लक्ष्मी-प्यारे**

इक प्यार का नगमां है, मौजों की रवानी है
जिन्दगी और कुछ भी नहीं, तेरी मेरी कहानी है -२-

कुछ पाकर खोना है, कुछ खोकर पाना है
जीवन का मतलब तो खोना और पाना है
दो पल के जीवन से एक उमर चुरानी है
जिन्दगी और कुछ भी नहीं, तेरी मेरी कहानी है -२-

तू धार है नदिया की, मैं तेरा किनारा हूं
तू मेरा सहारा है, मैं तेरा सहारा हूं
आंखों में समन्दर है, आशाओं का पानी है
जिन्दगी और कुछ भी नहीं, तेरी मेरी कहानी है -२-

तूफान तो आना है, आकर चले जाना है
परछाइयां रह जातीं, रह जाती निशानी है
जिन्दगी और कुछ भी नहीं, तेरी मेरी कहानी है -२-

जो दिल को तसल्ली दे वो साज उठा लाओ
खुशियों की तमन्ना है अश्कों की खानी है
किस बात का रोना है, हर चीज तो पानी जिन्दगी है
इक प्यार का नगमां...

Monthly ₹ 400 to ₹ 5000

२०११ जुलाई साल के प्रोत्साहक अनुदान प्राप्त करने के लिए रजिस्ट्री किए हुए सभी सद्स्य अध्यापकों को खुशी से निवेदन है कि आप सबके नाम नवंबर **समता हिन्दी** मैगजीन में छाप दिया जाएगा । और सभी प्रकार के विषय प्रत्येक किताबों के द्वारा भेज दिया जाएगा ।

सूचना : All the Teachers (all private & govt. inservice teachers only) can submit their applications(Page No. 9) on or before **1st Nov, 2010** to avail their PROTHSAHAK ANUDAAN from July 2010.

SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG
Gunadala, VIJAYAWADA-4.
Ph : 0866-2451611, 98483 52011.

भारत के विकास में महिलाओं की भूमिका

वैदिक काल से ही नारी को देवी का दर्जा दिया गया है। मध्यकाल मे मुस्लिम शासकों ने नारी को अनधकार के अन्धेरों में धकेल दिया। परन्तु आधुनिक युग में नारी ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में सहायता की। महिलाओं ने सदियों पुराने भारतीय समाज को भी बदलने के प्रयास किये। यह समाज अन्धविश्वासों और धार्मिक विश्वासों के द्वारा संचालित हो रहा था। वैदिक काल में सीता, अहिल्या, द्रौपदी, पार्वती और अन्य नारियाँ और देवियाँ हमारे लिए आदर्श बन गई क्योंकि उनके बलिदान और सदगुण महान थे, मध्यकालीन भारत में मीराबाई, चान्दबीबी, रजिया सुल्ताना, पदमिनी, नूरजहाँ, मुमताज महल, जीजा बाई और पन्ना धाय अग्रणी महिलायें थीं जिन्होंने भारत के सामाजिक और राजनैतिक प्रगति में अपना सक्रिय योगदान दिया। उन्होंने ततकालीन भारतीय समाज को अपने सदगुणों और कार्यकलापों के द्वारा परिवर्तित करने हेतु प्रयास किये। आधुनिक युग में भारत की नारियों ने स्वतंत्रता संघर्ष में भी अपना योगदान दिया। इनमें भीकाजी कामा, अरूण आसफ अली, सरोजिनी नायडू, एनी बेसैन्ट, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल और कस्तूरबा गांधी शामिल थीं। उन्होंने भारतीय जनसाधारण को भी परिवर्तित करने हेतु प्रयास किये और सामाजिक स्तरों पर उनको प्रबुद्ध करने के लिए चेष्टायें की। इनमें से कुछ नारियों ने सती प्रथा का भी विरोध किया।

अत्याधुनिक काल में (जो कि भारत की स्वतंत्रता के पश्चात आरम्भ हुआ) कई सन्नारियों ने जनसाधारण की दशा सुधारने हेतु कठित परिश्रम किया। औरतें व बच्चे इस महान कार्य में उनके लिए विशेष ध्यान के पात्र थे। इन्दिरा गांधी, पी.टी.ऊषा, शाईनी विल्सन, करणम मल्लेश्वरी, मदर टैरेसा, इसमत चुगताई, शबाना आजमी, जिस्टस फातिमा बीबी, किरण बेदी और अन्य कई नाम इस अत्याधुनिक काल के संदर्भ में लिए जा सकते हैं। इन नारियों ने राजनीति, खेल कूद, सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा, साहित्य, विधि, सिनेमा आदि कई क्षेत्रों में अपने योगदान दिये। अतः उन्होंने भारत में एक आधुनिक समाज की स्थापना करने हेतु प्रयत्न किये। जिसका सम्मान विश्व के अन्य सभी देश करें। ये दुख का विषय है कि नारियों को हमारे देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक मंचों पर पूर्णरूपेण भाग लेने के अवसर नहीं दिये जाते। लिंगभेद अभी भी कारगर है। महिलाओं के विरूद्ध पक्षपात होता है, घरों पर उनके साथ दुर्व्यवहार होता है, दफतरों में उनको भाग की

ROLE OF WOMEN IN INDIA'S DEVELOPMENT

Since the Vedic times, woman has been granted the status of Devi (goddess). During the medieval period, the Muslim rulers relegated her to the back-seat. But in the modern times, she helped India win freedom. Women also tried to transform the centuries-old Indian society, which was being guided by dogmas, superstitions and religious beliefs.

During the Vedic times, Sita, Ahilya, Draupadi, Parvati and other women or godesses became our idols due to their great sacrifices and virtues. During the medieval age in India, Meerabai, Chand Bibi, Razia Sultana, Padmini, Noor Jehan,Mumtaz Mehal, Jeeja Bai and Panna Dhai were the leading ladies who actively contributed in the social and political development of India. They tried to transform the contemporary Indian society through their virtues and actions. During the modern times, women of India also contributed towards the struggle for Indian independence. These included Bhikaji Cama, Aruna Asaf Ali, Sarojini Naidu, Annie Besant, Laxmi Bai of Jhansi, Begum Hazrat Mahal and Kasturba Gandhi. They also tried to transform the masses and enlighten them in social terms. Some of them fought against the Sati system too.

In the most modern times (after India's independence), many women worked hard for the upliftment of the masses. Women and children were under special focus in this great task. Indira Gandhi, P.T. Usha, Shiny Wilson, K. Malleswary, Mother Teresa, Ismat Chugtai, Quirr-ul-Tain Hyder, Shabana Azmi, Justice Fatima Biwi, Kiran Bedi and many more names can be mentioned in the context of most modern times. They made their contributions in politics, sports, societal transformation, education, literature, judiciary, cinema etc. Thus, they tried to build a modern society in India, which could be respected by all other nations of the world.

Sadly, women are not allowed to play their full parts on the social, cultural and political stages of our country. Gender bias still prevails. Women are dis-

वस्तुयें माना जाता है और यहां तक की उनके साथ फूलन देवी के समान बलात्करा भी किया जाता है।

अतः दम्भी पुरुष इन फूलन देवियों के कोप के शिकार होते हैं। और बाद में, वे इन्ही नारियों को समाज विरोधी बागी का नाम देते हैं। एक नारी माता भी है, उसका माता के रूप में दर्जा भगवान से भी ऊँचा है। वह किस प्रकार से भ्रष्टाचारिणी, कुटिल और दुराचारिणी हो सकती हैं? यह समाज आर्थिक, सामाजिक, और राजनैतिक कारणों की वजह से उसको पतिता बना देता हैं। परन्तु वास्तव में वह समाज के किसी भी अंग से कहीं अधिक पवित्र है। भारतीय नारियाँ हमारे देश के सभी कार्यक्षेत्रों में अपने योगदान देती हैं। अभियांत्रिकी, विज्ञान, चिकित्सा, राजनीति, समाज कार्य, शिक्षा, बाल पोषण, अन्तरिक्ष अनुसंधान, प्रौढ़ शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी (जिसमें साफ्टवेयर उत्पादन शामिल हैं) और पुरानी सामाजिक हठधर्मिताओं का नाश ऐसे कुछ क्षेत्र है जिनमें उनके आदानों की भरपूर मांग हैं। परन्तु राष्ट्रीय विकास के इन (और कई अन्य) क्षेत्रों में हमारी सन्नारियों को प्रशिक्षण की आवश्यकता हैं। उनका पूर्णरूपेण शिक्षित होना आवश्यक है और यह भी जरूरी है कि वे उन कार्यों में पूरी तरह से दक्ष हों जिन्हें वे पूर्ण करना चाहती हैं। पुरुषों की ओर से कई मामालों में मदद न मिलने की आशा हैं। परन्तु फिर भी उन्हें (नारियों को) अपने अपने क्षेत्रों में उत्कृष्टता हेतु परिश्रम करना होगा। उनकी लगन, सहनशीलता, क्षमतायें और नैतिक गुण पुरुषों से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। एक महिला अपना घर भी संभाल सकती है और घर के बाहर की व्यस्तथाओं का दायित्व भी निभा सकती हैं। परन्तु उसका पति केवल दफतर में कार्य करता हैं और घर तथा बच्चों को उत्तरदायित्व अपनी पत्नी पर डाल देता हैं। पुरुष की युद्ध प्रियता और उसकी तथाकथित नारी से श्रेष्ठता को तिरस्कृत किया जाना चाहिए। तभी हमारी महिलायें इस देश का विसाक कर पायेंगी। भारत ने परमाणु शक्ति बनने और भारत पाक युद्ध (१९७१) में विजय प्राप्त करने का गौरव श्रीमती इन्दिरा गांधी के नैतृत्व में हासिल किया था। यह सफलता भारत की नारियों की क्षमताओं का भरपूर परिचय देती हैं। हमारा देश अभी भी अन्धकारपूर्ण युग से बाहर नहीं निकला हैं। बच्चों का कृपोषण, औरतों और बच्चों के निम्न शैक्षणिक स्तर, बाल विवाह, सती प्रथा और नारियों का शोषण कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनकी तरफ ध्यान देना आवश्यक हैं। क्यों न हम महिलाओं को ही इन समस्याओं का समाधान करने दें? परन्तु उनकों ऐसा करने के लिए अनुमति देने से पहले पुरुषों को उन्हें अपने बराबर दर्जे पर स्वीकारना हागा, न कि उनको भाग विलास तथा शोषण की वस्तुएं मानना होगा ।

★★★★★

criminated against, maltreated at homes, viewed as objects of pleasure in offices and even raped just like Phoolan Devi was raped. So, the hypocrite males face the wrath of these Phoolans and later, they label these very women as anti-social rebels. A women is a mother too; her status, as a mother, is even higher than that of the almighty! How can she be corrupt, evil-minded or morally degraded. This society forces her to degrade herself due to economic, social or political compulsions. But she is much more pious than any component of the society.

Indian woman can contribute towards all the work areas of nation. Engineering, sciences, medicine, politics, social work, education, child nutrition, space research, adult education, information technology (including software development) and removal of old social dogmas are some of the areas demand. However, in order to deliver concrete results in these (and many other) areas of national development, our women need training. They themselves must be literate and fully adept at those tasks that they want to accomplish. The support of the stronger sex may be missing in many cases. But they would have to strive for excellence in their respective fields. Their dedication, perseverance, abilities and moral values are much superior to those possessed by men. A woman can manage her home as well as her appointments outside her home. But her husband works only in an office and puts the burden of the home and children on his wife. Male chauvinism and so called superiority of the stronger sex over the weaker sex must be eschewed then only, our women would be able to develop this nation. India became a nuclear superpower and also, won the Indo-Pak war (1971) under, the leadership of Mrs. Indira Gandhi. This achievement speaks volumes of Indian women's abilities.

Our country has still not come out of the dark age. Malnutrition of children, poor educational levels of women and children, child marriage, the Sati custom and exploitation of women are some of the key issues that need to be addressed. Why not let women themselves sort out these problems? But in order to let them do so, men would have to treat them as equals and not as mere objects of leisure or exploitation.

General Essay Competition for IX and X Std. Students

सितंबर 14 हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में निबंध प्रतियोगिता कार्यक्रम में आप अपने स्कूल की तरफ से नौवी और दसवी कक्षाओं के विद्यार्थियों को (नि:शुल्क) भेज सकते है।

विषय : भारत में अनेकता में एकता

उपर्युक्त विषय पर बच्चों से निबंध लिखवाकर बच्चों का नाम और स्कूल का नाम व मुद्रा के साथ समता हिन्दी प्रचार विभाग, गुणदला, विजयवाडा - 520 004 के नाम पोस्ट या कोरियर के द्वारा भेज देना चाहिए।

सूचना : सभी हिन्दी शिक्षकों से हमारा विनम्र निवेदन है कि अपनी पाठशालाओं से भेजनेवाली प्रतियोगिता प्रतियों को **अक्तूबर** 30, **2010** तारीक तक पहुंच देना चाहिए। अन्यथा विचार नहीं किया जाएगा। जिला स्थर पर सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा।

आपका : **समता हिन्दी प्रचार विभाग** गुणदल, विजयवाडा-520004. फोन : 9848352011.

Good News to All the Teachers!

All the teachers of Primary, Upper Primary and High School are requested to kindly send their "Prothsahak Anudaan Application" (See page no. 9) Form" on or before 1st November, 2010 you would be sent Central Application Forms & Booklets as and when we receive your "Regional Hindi Officer's Application". We hope and pray that you would co-operate with us now and in the days the follow.

मुस्कान तो मिले....

जब इस दुनियाँ में मेरा आगमन हुआ
मैंने मुस्कुराने की बहुत कोशिश की ।
ना जाने क्यों मैं मुस्करा ना सका,
रोने के सिवा कुछ और न कर सका ।
शायद ये तो मेरी अभी शुरुआत थी
बचपन, जवानी और बुढापे की कहानी कुछ और थी ।
बचपन के खेलों के संग,
अपनी प्रतिभा को संवारना चाहा
लेकिन खेल पर हावी होती राजनीति ने
मेरे स्वप्न को एक क्षणभंगुर बना डाला
अब बात मेरी जवानी की आई
दिल में उमंग और आंखों में शर्म लौट आई
एक दिन किसी ने मुझे भी
सच्चे प्यार का वादा किया ।
लेकिन हवश रूपी इस मोहब्बत ने
बेवफाई भरा तोहफा दे दिया
अब आया समय बुढापे का
बचपन की यादें और जवानी की बातों का
अपने राज दुलारें की दुत्कार का
अब अंतिम घडी समीप थी
आंखें किसी के इंतजार में खड़ी थी
उम्र भर मुझे मिले केवल शिकवे
और गिले, बस एक बार हार चुके जीत को
मुस्कान तो मिले।

- जितेन्दर सिंह जावाल जीत

भारतीय समता हिन्दी प्रचार परिषद्

समता हिन्दी प्रचार विभाग

Central Office : Gunadala, VIJAYAWADA - 520 004.

(Regd. by the Govt. of India)

NATIONAL HINDI TEST 20.....
NOMINAL ROLL LIST

V	VI	VII	VIII	IX	X	Total

Name of the School & Complete Address .....

.....

Name of the Hindi Teacher ..... Place..... Dist.....

S. No.	Name of the Student	Name of the Father	Class	Hall Ticket No.	Marks	Atten-dance

BHARATIYA SAMATA HINDI PRACHAR PARISHAD

कार्यनिर्वाहक आवेदन पत्र

SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG

(Regd. by the Govt. of India)
Central Office Buildings, Opp. Boarding, Gunadala, VIJAYAWADA-520 004.
Ph : (0866) 2451611, 2440112 Mobile : 09848352011. e-mail : samatahindi@yahoo.com

Photo

P.H. Convenor Regd. No. : _____ Mandal Convenor Regd. No. : _____

PLEASE FILL IN THE APPLICATION FORM COMPLETE IN BLOCK LETTERS

Hindi Teacher's Name _____ **Date of Birth** _____

Name (Father/Spouse) Mr./Mrs. _____

School Name _____

School Address _____

_____ **School Ph. No.** _____

Hindi Teacher House Address _____

_____ **Pin :** _____

Names of the Children of Hindi Teacher	**2. Date of Birth :**	**Class :**
1.		
2.		

Teacher Ph.No. (Res) _____

Regd. for the Month _____ **Date** _____

Hindi Teacher Signature _____

भारतीय समता हिन्दी प्रचार परिषद् विजयवाडा - 4.

ORDER FORM

ESTD : 1989

SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG
(Registered by the Govt. of India, Regd. Act No. 389 of 1994)
Central Office Buildings, Gunadala, VIJAYAWADA - 520 004.

Phone : 0866 - 2451611

Sir,

We request to to supply the following books for our school students (NHT) an amount (Exam fee) of Rs. ..... (Rs. .....) D.D. No. ..... in favour of "SAMATA HINDI PRACHAR VIBHAG" Andhra Bank, Gundadala, Vijayawada Branch is here with enclosed.

1. V Class _____
2. VI Class _____
3. VII Class _____
4. VIII Class _____
5. IX Class _____
6. X Class _____
   Total _____

NAME OF THE SCHOOL ADDRESS :

_____

_____

_____

Please fill the complete addresses of your area schools and approximate strength to Distribution of Hindi Books free of cost to the students.

SCHOOL NAME _____
ADDRESS _____
_____
_____ PIN ☐☐☐☐☐☐
TEL. _____

5th-	6th-	7th-	8th-	9th-	10th-

SCHOOL NAME _____
ADDRESS _____
_____
_____ PIN ☐☐☐☐☐☐
TEL. _____

5th-	6th-	7th-	8th-	9th-	10th-